الجزء ٣ — وقف لازم

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ

उन में	बाज़	पर	उन के बाज़	हम ने फ़ज़ीलत दी	यह रसूल (जमा)

مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ

मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	और हम ने दी	दरजे	उन के बाज़	और बुलन्द किए	जिस से अल्लाह ने कलाम किया

الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ

वह जो	बाहम लड़ते	न	चाहता अल्लाह	और अगर	रूहुल कुदुस (जिब्राईल अ) से	और उस की ताईद की हम ने	खुली निशानियां

مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا

उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	और लेकिन	खुली निशानियां	जो (जब) आ गई उन के पास	बाद से	उन के बाद

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۫ قف

वह बाहम न लड़ते	चाहता अल्लाह	और अगर	कुफ़्र किया	कोई-बाज़	और उन से	ईमान लाया	जो-कोई	फिर उन से

ع ٣٣ ٥ ١

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا

तुम ख़र्च करो	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	253	जो वह चाहता है	करता है	और लेकिन अल्लाह

مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ

और न दोस्ती	उस में	न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन	आजाए	कि	से पहले	हम ने दिया तुम्हें	से जो

وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

सिवाए उस के	नहीं माबूद	अल्लाह	254	ज़ालिम (जमा)	वही	और काफ़िर (जमा)	और न सिफ़ारिश

اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	जो	उसी का है	नीन्द	और न	ऊन्घ	न उसे आती है	थामने वाला	ज़िन्दा

فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا

जो	वह जानता है	उस की इजाज़त से	मगर (बग़ैर)	उस के पास	सिफ़ारिश करे	वह जो	कौन जो	ज़मीन में

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا

मगर	उस का इल्म	से	किसी चीज़ का	वह अहाता करते हैं	और नहीं	उन के पीछे	और जो	उन के सामने

بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

उन की हिफ़ाज़त	थकाती उस को	और नहीं	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	उस की कुर्सी	समा लिया	जितना वह चाहे

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ لَاۤ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۚ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ

हिदायत	बेशक जुदा हो गई	दीन	में	नहीं ज़बरदस्ती	255	अज़मत वाला	बुलन्द मरतबा	और वह

مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

उस ने थाम लिया	पस तहक़ीक़	अल्लाह पर	और ईमान लाए	गुमराह करने वाले को	न माने	पस जो	गुमराही	से

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾

256	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उस को	टूटना नहीं	मज़बूती	हलक़े को

यह रसूल हैं! हम ने उन में से बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी। उन में (बाज़) से अल्लाह ने कलाम किया और उन में से बाज़ के दरजे बुलन्द किए, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दीं और हम ने रूहुल क़ुदुस (अ) से उस की ताईद की, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते जो उन के बाद हुए, उस के बाद जबकि उन के पास खुली निशानियां आगईं, लेकिन उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, फिर उन में से कोई ईमान लाया और उन में से किसी ने कुफ़्र किया, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है। (253)

ऐ ईमान वालो! जो हम ने तुम्हें दिया उस में से ख़र्च करो इस से पहले कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी, न दोस्ती और न सिफ़ारिश, और काफ़िर वही ज़ालिम हैं। (254)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िन्दा, सब को थामने वाला, न उसे ऊन्घ आती है और न नीन्द, उसी का है जो आस्मानों और ज़मीन में है, कौन है जो सिफ़ारिश करे उस के पास उस की इजाज़त के बग़ैर, वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन के पीछे है, और वह नहीं अहाता कर सकते उस के इल्म में से किसी चीज़ का मगर जितना वह चाहे, उस की कुर्सी समाए हुए है आस्मानों और ज़मीन को, उस को उन की हिफ़ाज़त नहीं थकाती, और वह बुलन्द मरतबा, अ़ज़मत वाला है। (255)

ज़बरदस्ती नहीं दीन में, बेशक हिदायत से गुमराही जुदा हो गई है, पस जो गुमराह करने वाले को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए, पस तहक़ीक़ उस ने हलक़े को मज़बूती से थाम लिया, टूटना नहीं उस को, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (256)

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ

रौशनी	तरफ़	अन्धेरों	से	वह उन्हें निकालता है	जो लोग ईमान लाए	मददगार	अल्लाह

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـئُهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ

रौशनी	से	और उन्हें निकालते हैं	शैतान	उन के साथी	और जो लोग काफ़िर हुए

اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾ ع ٣٤ ٢

257	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ी	यही लोग	अन्धेरे (जमा)	तरफ़

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِىْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِىْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ

अल्लाह ने उसे दी	कि	उस का रब	बारे (में)	इब्राहीम (अ)	झगड़ा किया	वह शख़्स जो	तरफ़	क्या नहीं देखा आप (स) ने

الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّىَ الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا

मैं	उस ने कहा	और मारता है	ज़िन्दा करता है	जो कि	मेरा रब	इब्राहिम	कहा	जब	बादशाहत

وقف لازم

اُحْىٖ وَاُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِىْ بِالشَّمْسِ

सूरज को	लाता है	बेशक अल्लाह	इब्राहीम	कहा	और मैं मारता हूँ	ज़िन्दा करता हूँ

مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِىْ كَفَرَ ؕ

जिस ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तो वह हैरान रह गया	मग़्रिब	से	पस तू उसे ले आ	मश्रिक़	से

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥٨﴾ ۚ اَوْ كَالَّذِىْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ

एक बस्ती	पर (से)	गुज़रा	उस शख़्स के मानिंद जो	या	258	नाइन्साफ़ लोग	नहीं हिदायत देता	और अल्लाह

وَّهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْىٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ

बाद	अल्लाह	इस	ज़िन्दा करेगा	क्योंकर	उस ने कहा	अपनी छतों पर	गिर पड़ी थी	और वह

مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ

कितनी देर रहा	उस ने पूछा	उसे उठाया	फिर	साल	एक सौ	तो अल्लाह ने उस को मुर्दा रखा	इस का मरना

قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ

तू रहा	बल्कि	उस ने कहा	दिन से कुछ कम	या	एक दिन	मैं रहा	उस ने कहा

مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ

और देख	वह नहीं सड़ गया	और अपना पीना	अपना खाना	तरफ़	पस तू देख	एक सौ साल

اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ

हड्डियां	तरफ़	और देख	लोगों के लिए	एक निशानी	और हम तुझे बनाएंगे	अपना गधा	तरफ़

كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ

वाज़ेह हो गया	फिर जब	गोश्त	हम उसे पहनाते हैं	फिर	हम उन्हें जोड़ते हैं	किस तरह

لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٥٩﴾

259	क़ुदरत वाला	हर चीज़	पर	कि अल्लाह	मैं जान गया	उस ने कहा	उस पर

जो लोग ईमान लाए अल्लाह उन का मददगार है, वह उन्हें निकालता है अन्धेरों से रौशनी की तरफ़, और जो लोग काफ़िर हुए उन के साथी गुमराह करने वाले हैं, वह उन्हें निकालते हैं रौशनी से अन्धेरों की तरफ़, यही लोग दोज़ख़ी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (257)

क्या आप ने उस शख़्स की तरफ़ नहीं देखा जिस ने इब्राहीम (अ) से उन के रब के बारे में झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे बादशाहत दी थी, जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरा रब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है। उस ने कहा मैं ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ, इब्राहीम (अ) ने कहा बेशक अल्लाह सूरज को मश्रिक़ से निकालता है, पस तू उसे ले आ मग़्रिब से, तो वह काफ़िर हैरान रह गया, और अल्लाह नाइन्साफ़ लोगों को हिदायत नही देता। (258)

या उस शख़्स के मानिंद जो एक बस्ती से गुज़रा, और वह अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी, उस ने कहा अल्लाह उस के मरने के बाद उसे क्योंकर ज़िन्दा करेगा? तो अल्लाह ने उसे एक सौ साल मुर्दा रखा, फिर उसे उठाया (ज़िन्दा किया), अल्लाह ने पूछा तू कितनी देर रहा? उस ने कहा मैं एक दिन या दिन से कुछ कम रहा, उस ने फ़रमाया बल्कि तू एक सौ साल रहा है, पस तू अपने खाने पीने की तरफ़ देख, वह सड़ नहीं गया, और अपने गधे की तरफ़ देख, और हम तुझे लोगों के लिए एक निशानी बनाएंगे, और हड्डियों की तरफ़ देख हम उन्हें किस तरह जोड़ते हैं, फिर उन्हें गोश्त चढ़ाते हैं, फिर जब उस पर वाज़ेह हो गया तो उस ने कहा मैं जान गया कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। (259)

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰی ؕ قَالَ اَوَلَمْ

क्या नहीं	उस ने कहा	मुर्दा	तू ज़िन्दा करता है	क्योंकर	मुझे दिखा	मेरे रब	इब्राहीम	कहा	और जब

تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰی وَلٰكِنْ لِّیَطْمَىِٕنَّ قَلْبِیْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً

चार (4)	पस पकड़ ले	उस ने कहा	मेरा दिल	ताकि इत्मिनान हो जाए	और लेकिन	क्यों नहीं	उस ने कहा	यक़ीन किया

مِّنَ الطَّیْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَیْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰی كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ

उन से (उन के)	पहाड़	हर	पर	रख दे	फिर	अपने साथ	फिर उन को हिला	परिन्दे	से

جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ یَاْتِیْنَكَ سَعْیًا ؕ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ

ग़ालिब	कि अल्लाह	और जान ले	दौड़ते हुए	वह तेरे पास आएंगे	उन्हें बुला	फिर	टुकड़े

٣٥ ع ٣ حَكِیْمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	ख़र्च करते हैं	जो लोग	मिसाल	260	हिक्मत वाला

كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ

दाने	सौ (100)	हर बाल	में	बालें	सात	उगें	एक दाना	मानिंद

وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿٢٦١﴾ اَلَّذِیْنَ

जो लोग	261	जानने वाला	वुस्अत वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिस के लिए	बढ़ाता है	और अल्लाह

یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا

जो उन्हों ने ख़र्च किया	बाद में नहीं रखते	फिर	अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	ख़र्च करते हैं

مَنًّا وَّلَاۤ اَذًی ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ

उन पर	कोई ख़ौफ़	और न	उन का रब	पास	उन का अजर	उन के लिए	कोई तक्लीफ़	और न	कोई एहसान

وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَیْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ

ख़ैरात	से	बेहतर	और दरगुज़र	अच्छी	बात	262	ग़मगीन होंगे	वह	और न

یَّتْبَعُهَاۤ اَذًی ؕ وَاللّٰهُ غَنِیٌّ حَلِیْمٌ ﴿٢٦٣﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

ईमान वालो	ऐ	263	बुर्दबार	बेनियाज़	और अल्लाह	ईज़ा देना (सताना)	उस के बाद हो

لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰی ۙ كَالَّذِیْ یُنْفِقُ مَالَهٗ

अपना माल	ख़र्च करता	उस शख़्स की तरह जो	और सताना	एहसान जतला कर	अपने ख़ैरात	न ज़ाया करो

رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ

जैसी मिसाल	पस उस की मिसाल	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	और ईमान नहीं रखता	लोग	दिखलावा

صَفْوَانٍ عَلَیْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا یَقْدِرُوْنَ

वह क़ुदरत नहीं रखते	साफ़	तो उसे छोड़ दे	तेज़ बारिश	फिर उस पर बरसे	मिट्टी	उस पर	चिकना पत्थर

عَلٰی شَیْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿٢٦٤﴾

264	काफ़िरों की क़ौम	राह नही दिखाता	और अल्लाह	उन्हों ने कमाया	उस से जो	कोई चीज़	पर

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरे रब! मुझे दिखा दे तू क्योंकर मुर्दा को ज़िन्दा करता है, अल्लाह ने कहा क्या तू ईमान नहीं रखता? उस ने कहा क्यों नहीं? बल्कि (चाहता हूँ) ताकि मेरे दिल को इत्मिनान हो जाए, उस ने कहा पस तू चार परिन्दे पकड़ ले, फिर उन को अपने साथ हिला ले, फिर रख दे हर पहाड़ पर उन के टुकड़े, फिर उन्हें बुला वह तेरे पास दौड़ते हुए आएंगे, और जान ले कि अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (260)

उन लोगों की मिसाल जो ख़र्च करते हैं अपने माल अल्लाह के रास्ते में, एक दाने के मानिंद है जिस से सात बालें उगें, हर बाल में सौ दाने हों, और अल्लाह जिस के लिए चाहता है बढ़ाता है, और अल्लाह वुस्अत वाला जानने वाला है। (261)

जो लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं, फिर नहीं रखते ख़र्च करने के बाद कोई एहसान, न कोई तक्लीफ़ (पहुँचाते हैं) उन के लिए उन के रब के पास अजर है, न कोई ख़ौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (262)

अच्छी बात करना और दरगुज़र करना बेहतर है उस ख़ैरात से जिस के बाद ईज़ा देना हो, और अल्लाह बेनियाज़ बुर्दबार है। (263)

ऐ ईमान वालो! अपने ख़ैरात एहसान जतला कर और सता कर ज़ाया न करो उस शख़्स की तरह जो अपना माल लोगों के दिखलावे को ख़र्च करता है और अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, पस उस की मिसाल उस साफ़ पत्थर जैसी है जिस पर मिट्टी हो, फिर उस पर तेज़ बारिश बरसे तो उसे छोड़ दे बिलकुल साफ़, वह उस पर कुछ क़ुदरत नहीं रखते जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह राह नहीं दिखाता काफ़िरों को। (264)

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ

और मिसाल	जो लोग	ख़र्च करते हैं	अपने माल	हासिल करना	अल्लाह की ख़ुशनूदी

وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ

और सबात ओ यक़ीन	से	अपने दिल (जमा)	जैसे	एक बाग़	बुलन्दी पर	उस पर पड़ी	तेज़ बारिश

فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ

तो उस ने दिया	फल	दुगना	फिर अगर	न पड़ी	तेज़ बारिश	तो फ़ुवार	और अल्लाह

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾ اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ

जो	तुम करते हो	देखने वाला	265	क्या पसन्द करता है	तुम में से कोई	कि	हो	उस का	एक बाग़	से (का)

نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ

खजूर	और अंगूर	बहती हों	से	उस के नीचे	नहरें	उस के लिए	उस में	से

كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖ فَاَصَابَهَآ

हर क़िस्म के फल	और उस पर आ गया	बुढ़ापा	और उस के	बच्चे	बहुत कमज़ोर	तब उस पर पड़ा

اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ

एक बगोला	उस में	आग	तो वह जल गया	इसी तरह	अल्लाह वाज़ेह करता है	तुम्हारे लिए	निशानियां

لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ ع ٣٦ ٤

ताकि तुम	ग़ौर ओ फ़िक्र करो	266	ऐ	जो ईमान लाए (ईमान वालो)	तुम ख़र्च करो	से

طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ

पाकीज़ा	जो	तुम कमाओ	और से-जो	हम ने निकाला	तुम्हारे लिए	से	ज़मीन

وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ

और न	इरादा करो	गन्दी चीज़	से-जो	तुम ख़र्च करते हो	जब कि तुम नहीं हो	उस को लेने वाले

اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ حَمِيْدٌ ﴿٢٦٧﴾

मगर	यह कि	चश्म पोशी करो	उस में	और तुम जान लो	कि अल्लाह	बेनियाज़	ख़ूबियों वाला	267

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ

शैतान	तुम को डराता है	तंगदस्ती	और तुम्हें हुक्म देता है	बेहयाई का	और अल्लाह

يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾

तुम से वादा करता है	बख़्शिश	उस से (अपनी)	और फ़ज़्ल	और अल्लाह	वुस्अत वाला	जानने वाला	268

يُؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ

वह अता करता है	हिक्मत, दानाई	जिसे	वह चाहता है	और जिसे	दी गई	हिक्मत

فَقَدْ اُوْتِىَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

तहक़ीक़ दी गई	भलाई	बहुत	और नहीं	नसीहत क़ुबूल करता	सिवाए	अक़्ल वाले	269

और (उन की) मिसाल जो अपने माल ख़र्च करते हैं ख़ुशनूदी हासिल करने अल्लाह की, और अपने दिलों के पूरे सबात ओ क़रार के साथ, (ऐसी है) जैसे बुलन्दी पर एक बाग़ है, उस पर तेज़ बारिश पड़ी तो उस ने दुगना फल दिया, फिर अगर तेज़ बारिश न पड़ी तो फ़ुवार (ही काफ़ी है), और अल्लाह जो तुम करते हो देखने वाला है। (265)

क्या तुम में से कोई पसन्द करता है कि उस का एक बाग़ हो खजूर और अंगूरों का, उस के नीचे नहरें बहती हों, उस के लिए उस में हर क़िस्म के फल हों, और उस पर बुढ़ापा आ गया हो और उस के बच्चे बहुत कमज़ोर हों, तब उस पर एक बगोला आ पड़ा, उस में आग थी तो वह (बाग़) जल गया, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए निशानियां वाज़ेह करता है ताकि तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करो। (266)

ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो उस में से पाकीज़ा चीज़ें जो तुम कमाओ और उस में से जो हम ने निकाला तुम्हारे लिए ज़मीन से, और उस में से गन्दी चीज़ ख़र्च करने का इरादा न करो, जबकि तुम ख़ुद उस को लेने वाले नहीं मगर यह कि तुम चश्म पोशी कर जाओ, और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़, ख़ूबियों वाला है। (267)

शैतान तुम को तंगदस्ती से डराता है और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है, और अल्लाह तुम से अपनी बख़्शिश और फ़ज़्ल का वादा करता है, और अल्लाह वुस्अत वाला जानने वाला है। (268)

वह जिसे चाहता है हिक्मत (दानाई) अता करता है, और जिसे हिक्मत दी गई तहक़ीक़ उसे दी गई बहुत भलाई, और अक़्ल वालों के सिवा कोई नसीहत क़ुबूल नहीं करता। (269)

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ

और जो	तुम ख़र्च करोगे	से	कोई ख़ैरात	या	तुम नज़र मानो	कोई नज़र

فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾

तो बेशक अल्लाह	उसे जानता है	और नहीं	ज़ालिमों के लिए	कोई मददगार	270

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا

अगर	ज़ाहिर (अ़लानिया) दो	ख़ैरात	तो अच्छी बात	यह	और अगर	उस को छुपाओ

وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ

और वह पहुँचाओ	तंगदस्त (जमा)	तो वह	बेहतर	तुम्हारे लिए	और दूर कर देगा	तुम से

مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾ لَيْسَ

से, कुछ	तुम्हारी बुराइयाँ	और अल्लाह	जो कुछ तुम करते हो	बाख़बर	271	नहीं

عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَمَا

आप पर (आप का ज़िम्मा)	उन की हिदायत	और लेकिन अल्लाह	हिदायत देता है	जिसे	वह चाहता है	और जो

تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ

तुम ख़र्च करोगे	माल से	तो अपने वासते	और न	ख़र्च करो	मगर	हासिल करना

وَجْهِ اللّٰهِ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ

अल्लाह की रज़ा	और जो	तुम ख़र्च करोगे	माल से	पूरा मिलेगा	तुम्हें

وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾ لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا

और तुम	न ज़ियादती की जाएगी तुम पर	272	तंगदस्तों के लिए	जो	रुके हुए

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ ۡ

में	अल्लाह का रास्ता	नहीं कर सकते	चलना फिरना	ज़मीन (मुल्क) में

يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ

उन्हें समझे	नावाक़िफ़	मालदार	सवाल न करने से	तू पहचानता है उन्हें	उन के चहरे से

لَا يَسْــَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ

वह सवाल नहीं करते	लोग	लिपट कर	और जो	तुम ख़र्च करोगे	माल से

ع ٣٧ ٥ الربع

فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢٧٣﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ

तो बेशक अल्लाह	उस को	जानने वाला	273	जो लोग	ख़र्च करते हैं	अपने माल

بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ

रात में	और दिन	पोशीदा	और ज़ाहिर	पस उन के लिए है	उन का अजर

وقف منزل

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٤﴾

पास	उन का रब	और न	कोई ख़ौफ़	उन पर	और न	वह	ग़मगीन होंगे	274

और जो तुम ख़र्च करोगे कोई ख़ैरात या तुम कोई नज़र मानोगे तो बेशक अल्लाह उसे जानता है, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। **(270)**

अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर (अ़लानिया) दो तो यह अच्छी बात है, और अगर तुम उस को छुपाओ और तंगदस्तों को पहुँचाओ तो वह तुम्हारे लिए (ज़ियादा) बेहतर है, और वह दूर करेगा तुम्हारी कुछ बुराइयाँ, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। **(271)**

उन की हिदायत आप का ज़िम्मा नहीं, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तो अपने (ही) वासते, और ख़र्च न करो मगर अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा मिलेगा, और तुम पर ज़ियादती न की जाएगी। **(272)**

तंगदस्तों के लिए जो रुके हुए हैं अल्लाह की राह में, वह मुल्क में चलने फिरने की ताक़त नहीं रखते, उन्हें समझे नावाक़िफ़ उन के सवाल न करने की वजह से मालदार, तुम उन्हें उन के चहरे से पहचान सकते हो, वह सवाल नहीं करते लोगों से लिपट लिपट कर, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। **(273)**

जो लोग अपने माल ख़र्च करते हैं रात में और दिन को, पोशीदा और ज़ाहिर, पस उन के लिए है उन का अजर उन के रब के पास, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। **(274)**

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِیْ

वह शख़्स जो	खड़ा होता है	जैसे	मगर	न खड़े होंगे	सूद	खाते हैं	जो लोग

يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ

तिजारत	दर हक़ीक़त	उन्हों ने कहा	इस लिए कि वह	यह	छूने से	शैतान	उस को पागल बना दिया

مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ

पहुँचे उस को	पस जिस	सूद	और हराम किया	तिजारत	हालांकि अल्लाह ने हलाल किया	सूद	मानिंद

مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की तरफ़	और उस का मामला	जो हो चुका	तो उस के लिए	फिर वह बाज़ आ गया	उस का रब	से	नसीहत

وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾

275	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	तो वही	फिर करे	और जो

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ

पसन्द नहीं करता	और अल्लाह	ख़ैरात	और बढ़ाता है	सूद	मिटाता है अल्लाह

كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	276	गुनाहगार	हर एक नाशुक्रा

وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ

उन का रब	पास	उन का अजर	उन के लिए	ज़कात	और अदा की	नमाज़	और उन्हों ने क़ाइम की

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا

तुम डरो	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	277	ग़मगीन होंगे	और न वह	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न

اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِىَ مِنَ الرِّبٰٓوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾

278	ईमान वाले	तुम हो	अगर	सूद	से	जो बाक़ी रह गया	और छोड़ दो	अल्लाह

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ

तुम ने तौबा कर ली	और अगर	और उस का रसूल	अल्लाह	से	जंग के लिए	तो ख़बरदार हो जाओ	तुम न छोड़ोगे	फिर अगर

فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾

279	और न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा	न तुम ज़ुल्म करो	तुम्हारी अस्ल पूंजी	तो तुम्हारे लिए

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا

तुम बख़्शदो	और अगर	कुशादगी	तक	मुहलत	तंगदस्त	हो	और अगर

خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ

उस में	तुम लौटाए जाओगे	वह दिन	और तुम डरो	280	जानते	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर

اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾ ع ٣٨ ٨ ٦

281	ज़ुल्म न किये जाएंगे	और वह	उस ने कमाया	जो	हर शख़्स	पूरा दिया जाएगा	फिर	अल्लाह की तरफ़

وقف لازم

जो लोग सूद खाते हैं वह न खड़े होंगे मगर जैसे वह शख़्स खड़ा होता है जिस को पागल बना दिया हो शैतान ने छू कर, यह इस लिए कि उन्हों ने कहा तिजारत दर हक़ीक़त सूद के मानिंद है। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया और सूद को हराम किया, पस जिस को नसीहत पहुँची उस के रब की तरफ़ से फिर वह बाज़ आ गया तो उस के लिए है जो हो चुका, और उस का मामला अल्लाह के सुपुर्द है और जो फिर (सूद की तरफ़) लौटे तो वही दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (275)

अल्लाह सूद को मिटाता है और ख़ैरात को बढ़ाता है, और अल्लाह हर एक (किसी) नाशुक्रे गुनाहगार को पसन्द नहीं करता। (276)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की, उन के लिए उन का अजर है उन के रब के पास, और न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (277)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो, और जो सूद बाक़ी रह गया वह छोड़ दो अगर तुम ईमान वाले हो। (278)

फिर अगर तुम न छोड़ोगे तो अल्लाह और उस के रसूल से जंग के लिए ख़बरदार हो जाओ, और अगर तुम ने तौबा कर ली तो तुम्हारा अस्ल ज़र तुम्हारे लिए है, न तुम ज़ुल्म करो न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा। (279)

और अगर वह तंगदस्त हो तो कुशादगी होने तक मोहलत दे दो, और अगर (क़र्ज़) बख़्श दो तो तुम्हारे लिए ज़ियादा बेहतर है अगर तुम जानते हो। (280)

और उस दिन से डरो (जस दिन) तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर हर शख़्स को पूरा पूरा दिया जाएगा जो उस ने कमाया और उन पर ज़ुल्म न होगा। (281)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

मुक़र्ररा	एक मुद्दत	तक	उधार का	तुम मामला करो	जब	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ

فَاكْتُبُوْهُ ۭ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۠ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ

कातिब	और न इन्कार करे	इन्साफ़ से	कातिब	तुम्हारे दरमियान	और चाहिए कि लिख दे	तो उसे लिख लिया करो

اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ

उस पर हक़	वह जो	और लिखाता जाए	चाहिए कि लिख दे	अल्लाह ने उस को सिखाया	जैसे	कि वह लिखे

وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـــًٔا ۭ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ

वह जो	है	फिर अगर	कुछ	उस से	कम करे	और न	अपना रब	और अल्लाह से डरे

عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ

तो चाहिए कि लिखाए	लिखाए वह	कि	न कर सकता हो	या	कमज़ोर	या	बेअ़क़्ल	उस पर हक़

وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ۭ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ

अपने मर्द	से	दो गवाह	और गवाह कर लो	इन्साफ़ से	उस का सरपरस्त

فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ

तुम पसन्द करो	से-जो	और दो औ़रतें	तो एक मर्द	दो मर्द	न हों	फिर अगर

مِنَ الشُّهَدَاۗءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ۭ

दूसरी	उन में से एक	तो याद दिला दे	उन में से एक	भूल जाए	अगर	गवाह (जमा)	से

وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَاۗءُ اِذَا مَا دُعُوْا ۭ وَلَا تَسْـَٔـمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ

तुम लिखो	की	सुस्ती करो	और न	वह बुलाए जाएं	जब	गवाह	और न इन्कार करें

صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ

और ज़ियादा मज़बूत	अल्लाह के नज़दीक	ज़ियादा इन्साफ़	यह	एक मीआ़द	तक	बड़ा	या	छोटा

لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً

हाज़िर (हाथों हाथ)	सौदा	हो	सिवाए कि	शुबा में पड़ो	कि न	और ज़ियादा क़रीब	गवाही के लिए

تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ۭ

कि तुम वह न लिखो	तुम पर कोई गुनाह	तो नहीं	आपस में	जिसे तुम लेते रहते हो

وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۠ وَلَا يُضَاۗرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ۭ

गवाह	और न	लिखने वाला	और न नुक़्सान पहुँचाया जाये	जब तुम सौदा करो	और तुम गवाह कर लो

وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ

और अल्लाह से तुम डरो	तुम पर	गुनाह	तो बेशक यह	तुम करोगे	और अगर

وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ٢٨٢

282	जानने वाला	हर चीज़	और अल्लाह	और अल्लाह सिखाता है तुम्हें

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो!) जब तुम एक मुक़र्ररा मुद्दत तक (के लिए) उधार का मामला करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि लिख दे लिखने वाला तुम्हारे दरमियान इन्साफ़ से, और कातिब लिखने से इन्कार न करे, जैसे उस को सिखाया है अल्लाह ने, उसे चाहिए कि लिख दे, और जिस पर हक़ (क़र्ज़) है वह लिखाता जाए, और अपने रब अल्लाह से डरे, और न उस से कुछ कम करे, फिर अगर वह जिस पर हक़ (क़र्ज़) है वह बेअ़क़्ल या कमज़ोर है या न लिखा सकता हो बोल कर तो चाहिए कि उस का सरपरस्त इन्साफ़ से लिखा दे और अपने मर्दों में से दो गवाह कर लो, फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औ़रतें जिन को तुम गवाह पसन्द करो (ताकि) अगर उन में से एक भूल जाए तो उन में से एक (दूसरी) याद दिला दे, और गवाह इन्कार न करें जब बुलाए जाएं, और तुम लिखने में सुस्ती न करो (ख़ाह मामला) छोटा हो या बड़ा, वापस लौटाने का वक़्त, यह ज़ियादा इन्साफ़ है और गवाही के लिए ज़ियादा मज़बूत है अल्लाह के नज़दीक, और ज़ियादा क़रीब है कि तुम शुबा में न पड़ो, उस के सिवाए कि सौदा हाथों हाथ का हो जिसे तुम आपस में लेते रहते हो, तो कोई गुनाह नहीं कि तुम वह न लिखो और जब तुम सौदा करो तो गवाह कर लिया करो, और न नुक़्सान पहुँचाया जाये कातिब को और न गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो यह बेशक तुम पर गुनाह है, और तुम अल्लाह से डरो, और अल्लाह तुम्हें सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। **(282)**

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ

क़ब्ज़े में	तो गिरवी रखना	कोई लिखने वाला	तुम पाओ	और न	सफ़र	पर	तुम हो	और अगर

فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ

और अल्लाह से डरे	उस की अमानत	अमीन बनाया गया	जो शख़्स	तो चाहिए कि लौटा दे	किसी का	तुम्हारा कोई	एतिबार करे	फिर अगर

رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ

उस का दिल	गुनाहगार	तो बेशक	उसे छुपाएगा	और जो	गवाही	और तुम न छुपाओ	अपना रब

ع ٣٩ ٢ ٧

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٣﴾ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ

ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में	जो	अल्लाह के लिए	283	जानने वाला	तुम करते हो	उसे जो	और अल्लाह

وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ

अल्लाह	उस का	तुम्हारा हिसाब लेगा	तुम उसे छुपाओ	या	तुम्हारे दिल	में	जो	तुम ज़ाहिर करो	और अगर

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى

पर	और अल्लाह	वह चाहे	जिस को	वह अज़ाब देगा	वह चाहे	जिस को	फिर बख़्श देगा

كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ

उस का रब	से	उस की तरफ़	उतरा	जो कुछ	रसूल	मान लिया	284	क़ुदरत रखने वाला	हर चीज़

وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۫

और उस के रसूल	और उस की किताबें	और उस के फ़रिश्ते	अल्लाह पर	ईमान लाए	सब	और मोमिन (जमा)

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا

और हम ने इताअ़त की	हम ने सुना	और उन्हों ने कहा	उस के रसूल के	किसी एक	दरमियान	नहीं हम फ़र्क़ करते

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا

मगर	किसी पर	नहीं जिम्मदारी का बोझ डालता अल्लाह	285	लौट कर जाना	और तेरी तरफ़	हमारे रब	तेरी बख़्शिश

وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا

ऐ हमारे रब	जो उस ने कमाया	और उस पर	उस ने कमाया	जो	उस के लिए	उस की गुनजाइश

لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِيْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَاۤ

हम पर	डाल	और न	ऐ हमारे रब	हम चूकें	या	हम भूल जाएं	अगर	तो न पकड़ हमें

اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا

हम से उठवा	और न	ऐ हमारे रब	हम से पहले	जो लोग	पर	तू ने डाला	जैसे	बोझ

مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟

और बख़्श दे हमें	और दरगुज़र कर तू हम से	उस की	हम को	न ताक़त	जो

ع ٤٠ ٣ ٨

وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾

286	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	पस मदद कर हमारी	हमारा आक़ा	तू	और हम पर रहम कर

और अगर तुम सफ़र पर हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो गिरवी रखना चाहिए क़ब्ज़े में, फिर अगर तुम में कोई किसी का एतिबार करे तो जिस शख़्स को अमीन बनाया गया है उसे चाहिए कि लौटा दे उस की अमानत और अपने रब अल्लाह से डरे, और तुम गवाही न छुपाओ, और जो शख़्स उसे छुपाएगा तो बेशक उस का दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे जानने वाला है। (283)

अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और अगर तुम ज़ाहिर करो जो तुम्हारे दिलों में है या तुम उसे छुपाओ, अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा, फिर जिस को वह चाहे बख़्श दे और जिसको वह चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (284)

रसूल ने मान लिया जो कुछ उस की तरफ़ उतरा उस के रब की तरफ़ से और मोमिनो ने (भी), सब ईमान लाए अल्लाह पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर, हम उस के रसूलों में से किसी एक के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और उन्हों ने कहा हम ने सुना और हम ने इताअ़त की, तेरी बख़्शिश चाहिए ऐ हमारे रब! और तेरी तरफ़ लौट कर जाना है। (285)

अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता मगर उस की गुनजाइश (के मुताबिक़), उस के लिए (अजर) है जो उस ने कमाया और उस पर (अ़ज़ाब) है जो उस ने कमाया, ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ अगर हम भूल जाएं या हम चूकें, ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डाल जैसे तू ने डाला हम से पहले लोगों पर, ऐ हमारे रब! हम से न उठवा जिस की हम को ताक़त नहीं, और दरगुज़र फ़रमा हम से, और हमें बख़्श दे, और हम पर रहम कर, तू हमारा आक़ा है, पस हमारी मदद कर काफ़िरो की क़ौम पर। (286)

٢٠ رُكُوْعَاتُهَا ❀ سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرَانَ (٣) ❀ ٢٠٠ آيَاتُهَا

रुकुआत 20	(3) सूरह आले इमरान (इमरान का घराना)	आयात 200

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ

किताब	आप (स) पर	उस ने उतारी	2	संभालने वाला	हमेशा ज़िन्दा	उस के सिवा	नहीं माबूद	अल्लाह	1	अलिफ़-लाम-मीम

بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٣﴾

3	और इन्जील	तौरेत	और उस ने उतारी	उस से पहली	उस के लिए जो	तस्दीक़ करती	हक़ के साथ

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

इन्कार किया	जिन्हों ने	बेशक	फ़ुरक़ान	और उतारा	लोगों के लिए	हिदायत	उस से पहले

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤﴾

4	बदला लेने वाला	ज़बरदस्त	और अल्लाह	सख़्त	अ़ज़ाब	उन के लिए	अल्लाह की आयतों से

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ﴿٥﴾

5	आस्मान में	और न	ज़मीन में	कोई चीज़	उस पर	नहीं छुपी हुई	बेशक अल्लाह

هُوَ الَّذِىْ يُصَوِّرُكُمْ فِى الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ

नहीं माबूद	वह चाहे	जैसे	रहम (जमा)	में	सूरत बनाता है तुम्हारी	जो कि	वही है

اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦﴾ هُوَ الَّذِىْ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ

उस से (में)	किताब	आप पर	नाज़िल की	जिस	वही	6	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	उस के सिवा

اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

जो लोग	पस जो	मुताशाबेह	और दूसरी	किताब की अस्ल	वह	मुहक्कम (पुख़्ता)	आयतें

فِىْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ

चाहना (ग़र्ज़)	उस से	मुताशाबिहात	सो वह पैरवी करते हैं	कजी	उन के दिल	में

الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ج وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا اللّٰهُ م

सिवाए अल्लाह	उस का मतलब	जानता है	और नहीं	उस का मतलब	ढूंडना	फ़साद-गुमराही

وَالرّٰسِخُوْنَ فِى الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ لا كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ج

हमारा रब	से-पास (तरफ़)	सब	उस पर	हम ईमान लाए	कहते हैं	इल्म में	और मज़बूत

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٧﴾ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ

बाद	हमारे दिल	फेर	न	ऐ हमारे रब	7	अ़क़्ल वाले	मगर	समझते	और नहीं

اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ج اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾

8	सब से बड़ा देने वाला	तू	बेशक तू	रहमत	अपने पास	से	हमें	और इनायत फ़रमा	तू ने हमें हिदायत दी	जब

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम (1)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हमेशा ज़िन्दा, (सब का) संभालने वाला। (2)

उस ने आप (स) पर किताब उतारी हक़ के साथ जो उस से पहली (किताबों) की तस्दीक़ करती है, और उस ने तौरेत और इन्जील उतारी (3)

उस से पहले लोगों की हिदायत के लिए, और उस ने फ़ुरक़ान (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला) उतारा, बेशक जिन्हों ने अल्लाह की आयतों से इन्कार किया उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला। (4)

बेशक अल्लाह पर छुपी हुई नहीं कोई चीज़ ज़मीन में और न आस्मान में, (5)

वही तो है जो तुम्हारी सूरत बनाता है (माँ के) रहम में जैसे वह चाहे, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला। (6)

वही तो है जिस ने आप (स) पर किताब नाज़िल की, उस में मुहक्कम (पुख़्ता) आयतें हैं वह किताब की अस्ल हैं, और दूसरी मुताशाबेह (कई मअ़ने देने वाली), पस जिन लोगों के दिलों में कजी है सो वह उस से मुताशाबिहात की पैरवी करते हैं, फ़साद (गुमराही) की ग़र्ज़ से और उस का (ग़लत) मतलब ढून्डने की ग़र्ज़ से, और उस का मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और मज़बूत (पुख़्ता) इल्म वाले कहते हैं हम उस पर ईमान लाए सब हमारे रब की तरफ़ से है। और नहीं समझते मगर अ़क़्ल वाले (सिर्फ़ अ़क़्ल वाले समझते हैं) (7)

ऐ हमारे रब! हमारे दिल न फेर इस के बाद जब कि तू ने हमें हिदायत दी और हमें इनायत फ़रमा अपने पास से रहमत, बेशक तू सब से बड़ा देने वाला है। (8)

وقف النبی ﷺ وقف لازم وقف منزل

ऐ हमारे रब! बेशक तू लोगों को उस दिन जमा करने वाला है कोई शक नहीं जिस में, बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (9)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हरगिज़ न उन के माल उन के काम आएंगे और न उन की औलाद अल्लाह के सामने कुछ भी, और वही वह दोज़ख़ का इंधन हैं। (10)

जैसे फ़िरऔन वालों का मामला हुआ और वह जो उन से पहले थे, उन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, और अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (11)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हें कह दें तुम अ़नक़रीब मग़लूब होगे और जहन्नम की तरफ़ हांके जाओगे, और वह बुरा ठिकाना है। (12)

अलबत्ता तुम्हारे लिए उन दो गिरोहों में निशानी है जो बाहम मुक़ाबिल हुए, एक गिरोह लड़ता था अल्लाह की राह में और दूसरा काफ़िर था, वह उन्हें खुली आँखों से अपने से दो चन्द दिखाई देते थे, और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है ताईद करता है, बेशक उस में देखने वालों (अ़क़्लमन्दों) के लिए एक इब्रत है। (13)

लोगों के लिए मरग़ूब चीज़ों की मुहब्बत ख़ुशनुमा कर दी गई, मसलन औरतें और बेटे, और ढेर जमा किए हुए सोने और चाँदी के, और निशान ज़दा घोड़े, और मवेशी, और खेती, यह दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ ओ सामान है, और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। (14)

कह दें, क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर बताऊँ? उन लोगों के लिए जो परहेज़गार हैं, उन के रब के पास बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें जारी (रवां) हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और पाक बीवियां और अल्लाह की ख़ुशनूदी, और अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (15)

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ

ऐ हमारे रब	बेशक तू	जमा करने वाला	लोगों	उस दिन	नहीं शक	उस में	बेशक अल्लाह	नहीं ख़िलाफ़ करता

الْمِيْعَادَ ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ ع ١ ٩

वादा	9	बेशक	वह लोग जो	उन्हों ने कुफ़्र किया	हरगिज़ न	काम आएंगे	उन के	उन के माल

وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ﴿١٠﴾

और न	उन की औलाद	अल्लाह से	कुछ	और वही	वह	ईंधन	आग (दोज़ख़)	10

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ

जैसे-मामला	फ़िरऔन वाले	और वह जो कि	उन से पहले	उन्हों ने झुटलाया	हमारी आयतें	सो उन्हें पकड़ा

اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

अल्लाह	उन के गुनाहों पर	और अल्लाह	सख़्त	अ़ज़ाब	11	कह दें	वह जो कि	उन्हों ने कुफ़्र किया

سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٢﴾ قَدْ كَانَ

अ़नक़रीब तुम मग़लूब होगे	और तुम हांके जाओगे	तरफ़	जहन्नम	और बुरा	ठिकाना	12	अलबत्ता	है

لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى

तुम्हारे लिए	एक निशानी	में	दो गिरोह	वह बाहम मुक़ाबिल हुए	एक गिरोह	लड़ता था	में	अल्लाह की राह	और दूसरा

كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ

काफ़िर	वह उन्हें दिखाई देते	उन के दो चन्द	खुली आँखें	और अल्लाह	ताईद करता है	अपनी मदद

مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿١٣﴾

जिसे	वह चाहता है	बेशक	में	उस	एक इब्रत	देखने वालों के लिए	13

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ

ख़ुशनुमा कर दी गई	लोगों के लिए	मुहब्बत	मरग़ूब चीज़ें	से (मसलन)	औ़रतें	और बेटे	और ढेर

الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ

जमा किए हुए	से	सोना	और चाँदी	और घोड़े	निशान ज़दा	और मवेशी

وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ

और खेती	यह	साज़ ओ सामान	ज़िन्दगी	दुनिया	और अल्लाह	उस के पास

حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا

अच्छा	ठिकाना	14	कह दें	क्या मैं तुम्हें बताऊँ	बेहतर	से	उस	उन लोगों के लिए जो	परहेज़गार हैं

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ

पास	उन का रब	बाग़ात	जारी हैं	से	उन के नीचे	नहरें	हमेशा रहेंगे	उस में	और बीवियां

مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۚ ﴿١٥﴾

पाक	और ख़ुशनूदी	से	अल्लाह	और अल्लाह	देखने वाला	बन्दों को	15

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا

और हमें बचा	हमारे गुनाह	सो बख़्शदे हमें	ईमान लाए	बेशक हम	ऐ हमारे रब	कहते हैं	जो लोग

عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ

और ख़र्च करने वाले	और हुक्म बजा लाने वाले	और सच्चे	सब्र करने वाले	16	दोज़ख़	अ़ज़ाब

وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ

नहीं माबूद	कि वह	अल्लाह ने गवाही दी	17	रात के आख़िर हिस्से में	और बख़्शिश मांगने वाले

اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ

इन्साफ़ के साथ	क़ाईम (हाकिम)	और इल्म वाले	और फ़रिश्ते	सिवाए-उस

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ اِنَّ الدِّيْنَ

النِّصْف

दीन	बेशक	18	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	सिवाए उस	नहीं माबूद

عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا

मगर	किताब दी गई	वह जिन्हें	इख़्तिलाफ़ किया	और नहीं	इस्लाम	अल्लाह के नज़दीक

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ

इन्कार करे	और जो	आपस में	ज़िद	इल्म	जब आ गया उन के पास	बाद से

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ

तो कह दें	वह आप (स) से झगड़ें	फिर अगर	19	हिसाब	तेज़	तो बेशक अल्लाह	अल्लाह की आयात का

اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ

वह जो कि	और कह दें	मेरी पैरवी की	और जो-जिस	अल्लाह के लिए	अपना मुँह	मैं ने झुका दिया

اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ

तो उन्हों ने राह पा ली	वह इस्लाम लाए	पस अगर	क्या तुम इस्लाम लाए	और अनपढ़	किताब दिए गए (अहले किताब)

ع ٢ ١١ ١٠ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾ ع

20	बन्दों को	देखने वाला	और अल्लाह	पहुँचा देना	आप पर	तो सिर्फ़	वह मुँह फेरें	अगर और

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

नबियों को	और क़त्ल करते हैं	अल्लाह की आयात का	इन्कार करते हैं	वह जो	बेशक

بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ

लोगों से	इन्साफ़ का	हुक्म करते हैं	जो लोग	और क़त्ल करते हैं	नाहक़

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ

ज़ाया हो गए	वह जो कि	यही	21	दर्दनाक	अ़ज़ाब	सो उन्हें ख़ुशख़बरी दें

اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٢﴾

22	मददगार	कोई	उन का	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	उन के अ़मल

जो लोग कहते हैं ऐ हमारे रब! बेशक हम ईमान लाए, सो हमें हमारे गुनाह बख़्शदे और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा। (16)

सब्र करने वाले और सच्चे, हुक्म बजा लाने वाले, ख़र्च करने वाले और बख़्शिश मांगने वाले रात के आख़िर हिस्से में। (17)

अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और फ़रिश्तों और इल्म वालों ने (भी), (वही) हाकिम है इन्साफ़ के साथ, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला। (18)

बेशक दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम है, और जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास आ गया इल्म, आपस की ज़िद से, और जो अल्लाह की आयात (हुक्मों) का इन्कार करे तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (19)

फिर अगर वह आप (स) से झगड़ें तो कह दें मैं ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और जिस ने मेरी पैरवी की, और आप (स) अहले किताब और अनपढ़ों से कह दें क्या तुम इस्लाम लाए? पस अगर वह इस्लाम ले आए तो उन्हों ने राह पा ली, और अगर वह मुँह फेर लें तो आप पर सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह देखने वाला है (अपने) बन्दों को। (20)

बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और नबियों को क़त्ल करते हैं नाहक़, और उन्हें क़त्ल करते हैं जो लोग इन्साफ़ का हुक्म करते हैं, सो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दें। (21)

यही वह लोग हैं जिन के अ़मल ज़ाया हो गए दुनिया में और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार नहीं। (22)

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ اُوۡتُوۡا نَصِيۡبًا مِّنَ الۡكِتٰبِ يُدۡعَوۡنَ اِلٰى

तरफ़	बुलाए जाते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या नहीं देखा

كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحۡكُمَ بَيۡنَهُمۡ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيۡقٌ مِّنۡهُمۡ وَهُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿٢٣﴾

23	मुँह फेरने वाले	और वह	उन से	एक फ़रीक़	फिर जाता है	फिर	उन के दरमियान	ता कि वह फ़ैसला करे	अल्लाह की किताब

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَالُوۡا لَنۡ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَيَّامًا مَّعۡدُوۡدٰتٍ ۖ

गिनती के	चन्द दिन	मगर	आग	हमें हरगिज़ न छुएगी	कहते हैं	इस लिए कि वह	यह

وَّغَرَّهُمۡ فِىۡ دِيۡنِهِمۡ مَّا كَانُوۡا يَفۡتَرُوۡنَ ﴿٢٤﴾ فَكَيۡفَ اِذَا جَمَعۡنٰهُمۡ لِيَوۡمٍ

उस दिन	उन्हें हम जमा करेंगे	जब	सो क्या	24	वह घड़ते थे	जो	उन का दीन	में	और उन्हें धोके में डाल दिया

لَّا رَيۡبَ فِيۡهِ ۗ وَوُفِّيَتۡ كُلُّ نَفۡسٍ مَّا كَسَبَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿٢٥﴾

25	हक़ तलफ़ी न होगी	और वह	उस ने कमाया	जो	शख़्स	हर	और पूरा पाएगा	उस में	शक नहीं

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الۡمُلۡكِ تُؤۡتِى الۡمُلۡكَ مَنۡ تَشَآءُ وَتَنۡزِعُ الۡمُلۡكَ

मुल्क	और छीन ले	तू चाहे	जिसे	मुल्क	तू दे	मुल्क	मालिक	ऐ अल्लाह	आप कहें

مِمَّنۡ تَشَآءُ ۘ وَتُعِزُّ مَنۡ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنۡ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الۡخَيۡرُ ؕ

तमाम भलाई	तेरे हाथ में	तू चाहे	जिसे	और ज़लील कर दे	तू चाहे	जिसे	और इज़्ज़त दे	तू चाहे	जिस से

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿٢٦﴾ تُوۡلِجُ الَّيۡلَ فِى النَّهَارِ وَتُوۡلِجُ النَّهَارَ

दिन	और दाख़िल करता है तू	दिन में	रात	तू दाख़िल करता है	26	क़ादिर	चीज़	हर	पर	बेशक तू

فِى الۡيَّلِ ۘ وَتُخۡرِجُ الۡحَىَّ مِنَ الۡمَيِّتِ وَتُخۡرِجُ الۡمَيِّتَ مِنَ الۡحَىِّ ۘ

जानदार	से	बेजान	और तू निकालता है	बेजान	से	जानदार	और तू निकालता है	रात में

وَتَرۡزُقُ مَنۡ تَشَآءُ بِغَيۡرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ

मोमिन (जमा)	न बनाएं	27	बे हिसाब	तू चाहे	जिसे	और तू रिज़्क़ देता है

الۡكٰفِرِيۡنَ اَوۡلِيَآءَ مِنۡ دُوۡنِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۚ وَمَنۡ يَّفۡعَلۡ ذٰلِكَ

ऐसा	करे	और जो	मोमिन (जमा)	अलावा (छोड़ कर)	दोस्त (जमा)	काफ़िर (जमा)

فَلَيۡسَ مِنَ اللّٰهِ فِىۡ شَىۡءٍ اِلَّاۤ اَنۡ تَتَّقُوۡا مِنۡهُمۡ تُقٰٮةً ؕ

बचाव	उन से	बचाव करो	कि	सिवाए	कोई तअ़ल्लुक़	अल्लाह	से	तो नहीं

وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفۡسَهٗ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الۡمَصِيۡرُ ﴿٢٨﴾ قُلۡ اِنۡ

अगर तुम	कह दें	28	लौट जाना	और अल्लाह की तरफ़	अपनी ज़ात	और अल्लाह डराता है तुम्हें

تُخۡفُوۡا مَا فِىۡ صُدُوۡرِكُمۡ اَوۡ تُبۡدُوۡهُ يَعۡلَمۡهُ اللّٰهُ ؕ وَيَعۡلَمُ مَا

जो	और वह जानता है	अल्लाह उसे जानता है	तुम ज़ाहिर करो	या	तुम्हारे सीने (दिल)	में	जो	छुपाओ

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿٢٩﴾

29	क़ादिर	चीज़	हर	पर	और अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें दिया गया किताब का एक हिस्सा, वह अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाए जाते हैं ता कि वह उन के दरमियान फ़ैसला करे, फिर उन का एक फ़रीक़ फिर जाता है, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

यह इस लिए है कि वह कहते हैं हमें (दोज़ख़) की आग हरगिज़ न छुएगी मगर गिनती के चन्द दिन, और उन्हें उन के दीन (के बारे) में धोके में डाल दिया उस ने जो वह घड़ते थे। (24)

सो क्या (हाल होगा) जब हम उन्हें उस दिन जमा करेंगे जिस में कोई शक नहीं, और हर शख़्स पूरा पूरा पाएगा जो उस ने कमाया और उन की हक़ तलफ़ी न होगी। (25)

आप कहें ऐ अल्लाह! मालिके मुल्क तू जिसे चाहे मुल्क दे, तू मुल्क छीन ले जिस से तू चाहे, और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील कर दे, तेरे हाथ में तमाम भलाई है, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। (26)

तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दाख़िल करता है दिन को रात में, और तू बेजान से जानदार निकालता है और जानदार से बेजान निकालता है, और जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (27)

मोमिन न बनाएं मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त, और जो ऐसा करे तो उस का अल्लाह से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं सिवाए इस के कि तुम उन से बचाव करो, और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से, और अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। (28)

कह दें जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अगर तुम छुपाओ या उसे ज़ाहिर करो अल्लाह उसे जानता है, और वह जानता है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (29)

معانقة ٢ عند المتاخرين ١٢

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ

से-कोई	उस ने की	और जो	मौजूद	नेकी	से (कोई)	उस ने की	जो	शख़्स	हर	पाएगा	दिन

سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا ۢ بَعِيْدًا ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ

और अल्लाह तुम्हें डराता है	दूर	फ़ासला	और उस के दरमियान	उस के दरमियान	काश कि	आरज़ू करेगा	बुराई

ع ١١ / ٣

نَفْسَهٗ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ٣٠ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ

तो मेरी पैरवी करो	अल्लाह	मुहब्बत रखते	अगर तुम हो	आप कह दें	30	बन्दों पर	शफ़क़त करने वाला	और अल्लाह	अपनी ज़ात

يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ٣١

31	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	गुनाह तुम्हारे	और तुम्हें बख़्शदेगा	तुम से मुहब्बत करेगा अल्लाह

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ٣٢

32	काफ़िर (जमा)	नहीं दोस्त रखता	तो बेशक अल्लाह	वह फिर जाएं	फिर अगर	और रसूल	अल्लाह	तुम इताअ़त करो	आप कह दें

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓي اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ

और इमरान का घराना	और इब्राहीम (अ) का घराना	और नूह (अ)	आदम (अ)	चुन लिया	बेशक अल्लाह

عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ٣٣ ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ٣٤

34	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	दूसरे	से	वह एक	औलाद	33	सारे जहान	पर

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ

मेरे पेट में	जो	तेरे लिए	मैं ने नज़र किया	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	इमरान की बीवी	कहा	जब

مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٣٥ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا

उस ने उस को जन्म दिया	सो जब	35	जानने वाला	सुनने वाला	तू	बेशक तू	मुझ से	सो तू कुबूल कर ले	आज़ाद किया हुआ

قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ۭ

उस ने जना	जो	खूब जानता है	और अल्लाह	लड़की	जन्म दी	मैं ने	ऐ मेरे रब	उस ने कहा

وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّىْٓ اُعِيْذُهَا

पनाह में देती हूँ उस को	और मैं	मरयम	उस का नाम रखा	और मैं	मानिंद लड़की	लड़का	और नहीं

بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٣٦ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ

कुबूल	उस का रब	तो कुबूल किया उस को	36	मरदूद	शैतान	से	और उस की औलाद	तेरी

حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۭ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا

उस के पास	दाख़िल होता	जिस वक़्त भी	ज़करिया (अ)	और सुपुर्द किया उस को	अच्छा	बढ़ाना	और परवान चढ़ाया उस को	अच्छा

زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ۭ

यह	तेरे लिए	कहां	ऐ मरयम	उस ने कहा	खाना	उस के पास	पाया	मेहराब (हुजरा)	ज़करिया (अ)

قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ٣٧

37	बे हिसाब	चाहे	जिसे	रिज़्क़ देता है	बेशक अल्लाह	पास अल्लाह	से	यह	उस ने कहा

जिस दिन हर शख़्स (मौजूद) पाएगा जो उस ने की कोई नेकी, और जो उस ने कोई बुराई की। वह आरज़ू करेगा काश उस के दरमियान और उस (बुराई) के दरमियान दूर का फ़ासला होता, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराता है, और अल्लाह शफ़क़त करने वाला है बन्दों पर। (30)

आप कह दें अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्शदेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (31)

आप कह दें तुम इताअ़त करो अल्लाह की और रसूल की, फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (32)

बेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम (अ) और नूह (अ) को और इब्राहीम (अ) ओ इमरान के घराने को सारे जहान पर। (33)

वह औलाद थे एक दूसरे की, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (34)

जब इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब! जो मेरे पेट में है, मैं ने तेरी नज़र किया (सब से) आज़ाद रख कर, सो तू मुझ से कुबूल कर ले, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (35)

सो जब उस ने उस (मरयम) को जन्म दिया तो वह बोली ऐ मेरे रब! मैं ने जन्म दी है लड़की, और अल्लाह खूब जानता है जो उस ने जन्म दिया, और लड़का लड़की के मानिंद नहीं होता और मैं ने उस का नाम मरयम रखा, और मैं उस को और उस की औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ शैतान मरदूद से। (36)

तो उस को उस के रब ने अच्छी तरह कुबूल किया और उस को अच्छी तरह परवान चढ़ाया और ज़करिया (अ) को उस का कफ़ील बनाया। जब भी ज़करिया (अ) उस के पास हुजरे में दाख़िल होते उस के पास खाना पाते,
उस (ज़करिया (अ) ने कहा ऐ मरयम! यह तेरे पास कहां से आया? उस ने कहा यह अल्लाह के पास से है, बेशक अल्लाह जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (37)

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً

औलाद	अपने पास	से	अ़ता कर मुझे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	अपना रब	ज़करिया	दुआ की	वहीं

طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ

खड़े हुए	और वह	फ़रिश्ते	तो आवाज़ दी उस को	38	दुआ	सुनने वाला	बेशक तू	पाक

يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا ۢ بِكَلِمَةٍ

कलिमा	तस्दीक़ करने वाला	यहया (अ)	तुम्हें खुशख़बरी देता है	कि अल्लाह	मेहराब (हुजरा)	में	नमाज़ पढ़ते

مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٩﴾ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	39	नेकोकार (जमा)	से	और नबी	और नफ़्स को क़ाबू में रखने वाला	और सरदार	अल्लाह	से

اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ

बांझ	और मेरी औरत	बुढ़ापा	जब कि मुझे पहुँच गया	लड़का	मेरे लिए	होगा	कहां

قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ؕ

कोई निशानी	मेरे लिए	मुक़र्रर फ़रमा दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	40	जो वह चाहता है	करता है	अल्लाह	इसी तरह	उस ने कहा

قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ

अपना रब	और तू याद कर	इशारा	मगर	तीन दिन	लोग	कि न बात करेगा	तेरी निशानी	उस ने कहा

كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾ ع وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ ع ٤ ١١ ١٢

फ़रिश्ते	कहा	और जब	41	और सुबह	शाम	और तस्बीह कर	बहुत

يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰكِ عَلٰى

पर	और बरगुज़ीदा किया तुझ को	और पाक किया तुझ को	चुन लिया तुझ को	बेशक अल्लाह	ऐ मरयम

نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ

और रुकूअ़ कर	और सिज्दा कर	अपने रब की	तू फ़रमांबरदारी कर	ऐ मरयम	42	तमाम जहान	औ़रतें

مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ

तेरी तरफ़	हम यह वहि करते हैं	ग़ैब	ख़बरें	से	यह	43	रुकूअ़ करने वाले	साथ

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۖ

मरयम	पर्वरिश करे	कौन-उन	अपने क़लम	वह डालते थे	जब	उन के पास	और तू न था

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ

ऐ मरयम	फ़रिश्ते	जब कहा	44	जब वह झगड़ते थे	उन के पास	और तू न था

اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

इब्ने मरयम	ईसा	मसीह (अ)	उस का नाम	अपने	एक कलिमा की	तुझे बशारत देता है	बेशक अल्लाह

وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ ۙ

45	मुक़र्रिब (जमा)	और से	और आख़िरत	दुनिया	में	बा आबरू

वहीं ज़करिया (अ) ने अपने रब से दुआ की। ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाक औलाद अ़ता कर, तू बेशक दुआ सुनने वाला है। (38)

तो उन्हें आवाज़ दी फ़रिश्तों ने जब वह हुजरे में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह तुम्हें यहया (अ) की खुशख़बरी देता है अल्लाह के कलिमे की तस्दीक़ करने वाला, सरदार, और नफ़्स को क़ाबू रखने वाला, और नबी (होगा) नेकोकारों में से। (39)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कहां से होगा? जब कि मुझे बुढ़ापा पहुँच चुका है, और मेरी औ़रत बांझ है, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है। (40)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुक़र्रर फ़रमा दे मेरे लिए कोई निशानी? उस ने कहा तेरी निशानी यह है कि तू लोगों से तीन दिन बात न करेगा मगर इशारे से, तू अपने रब को बहुत याद कर, और सुब्ह ओ शाम तस्बीह कर। (41)

और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बेशक अल्लाह ने तुझ को चुन लिया और तुझ को पाक किया और तुझ को बरगुज़ीदा किया औ़रतों पर तमाम जहान की। (42)

ऐ मरयम! तू अपने रब की फ़रमांबरदारी कर और सिज्दा कर और रुकूअ़ कर रुकूअ़ करने वालों के साथ। (43)

यह ग़ैब की ख़बरें हैं, हम आप की तरफ़ वहि करते हैं, और आप उन के पास न थे जब वह (क़ुरआ के लिए) अपने क़लम डाल रहे थे कि उन में से कौन मरयम की पर्वरिश करेगा? और आप (स) उन के पास न थे जब वह झगड़ते थे। (44)

जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तुझे अपने एक कलमे की बशारत देता है, उस का नाम मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम है, दुनिया और आख़िरत में बाआबरू, और मुक़र्रिबों से होगा, (45)

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ

वह बोली	46	नेकोकार	और से	और पुख़्ता उम्र	पालने में	लोग	और बातें करेगा

رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ۭ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ

अल्लाह	इसी तरह	उस ने कहा	कोई मर्द	हाथ लगाया मुझे	और नहीं	बेटा	होगा मेरे हां	कैसे	ऐ मेरे रब

يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾

47	सो वह हो जाता है	हो जा	उस को	वह कहता है	तो	कोई काम	वह इरादा करता है	जब	जो वह चाहता है	पैदा करता है

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُوْلًا اِلٰى

तरफ़	और एक रसूल	48	और इन्जील	और तौरेत	और दानाई	और वह सिखाएगा उस को किताब

بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۙ اَنِّىْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّىْٓ اَخْلُقُ

बनाता हूँ	कि मैं	तुम्हारा रब	से	एक निशानी के साथ	आया हूँ तुम्हारी तरफ़	कि मैं	बनी इस्राईल

لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِ

हुक्म से	परिन्दा	तो वह हो जाता है	उस में	फिर फूंक मारता हूँ	परिन्दा	मानिंद-शक्ल	गारा	से	तुम्हारे लिए

اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْىِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह के हुक्म से	मुर्दे	और मैं ज़िन्दा करता हूँ	और कोढ़ी को	मादरज़ाद अन्धा	और मैं अच्छा करता हूँ	अल्लाह

وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

उस	में	बेशक	घरों अपने	में	तुम ज़ख़ीरा करते हो	और जो	तुम खाते हो	जो	और तुम्हें बताता हूँ

لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ

अपने से पहली	जो	और तस्दीक़ करने वाला	49	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	एक निशानी

مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ

और आया हूँ तुम्हारे पास	तुम पर	हराम की गई	वह जो कि	बाज़	तुम्हारे लिए	और ता कि हलाल कर दूँ	तौरेत	से

بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٥٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ

और तुम्हारा रब	मेरा रब	बेशक अल्लाह	50	और मेरा कहा मानो	सो तुम अल्लाह से डरो	तुम्हारा रब	से	एक निशानी

فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾ فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى

ईसा (अ)	महसूस किया	फिर जब	51	सीधा	रास्ता	यह	सो तुम इबादत करो उस की

مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

हवारी (जमा)	कहा	अल्लाह की तरफ़	मेरी मदद करने वाला	कौन	उस ने कहा	कुफ़्र	उन से

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا

हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	52	फ़रमांबरदार	कि हम	तू गवाह रह	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	अल्लाह की मदद करने वाले	हम

بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾

53	गवाही देने वाले	साथ	सो तू हमें लिख ले	रसूल	और हम ने पैरवी की	तू ने नाज़िल किया	जो

और लोगों से गहवारे में और पुख़्ता उम्र में बातें करेगा और नेकोकारों में से होगा। (46)

वह बोली ऐ मेरे रब! मेरे हां बेटा कैसे होगा? और किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, जब वह किसी काम का इरादा करता है तो वह कहता है उस को "हो जा" सो वह हो जाता है। (47)

और वह उस को सिखाएगा किताब और दानाई और तौरेत और इन्जील। (48)

और बनी इस्राईल की तरफ़ एक रसूल, (उस ने कहा) कि मैं तुम्हारी तरफ़ एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब की तरफ़ से, मैं तुम्हारे लिए गारे से परिन्दे जैसी शक्ल बनाता हूँ, फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से परिन्दा हो जाता है, और मैं अच्छा करता हूँ मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को, और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे ज़िन्दा करता हूँ, और मैं तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते हो और जो तुम अपने घरों में ज़ख़ीरा करते हो, बेशक उस में तुम्हारे लिए एक निशानी है अगर तुम हो ईमान वाले। (49)

और मैं अपने से पहली (किताब) तौरेत की तस्दीक़ करने वाला हूँ और ता कि तुम्हारे लिए बाज़ वह चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुम पर हराम की गई थीं, और तुम्हारे पास एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब से, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (50)

बेशक अल्लाह (ही) मेरा और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (51)

फिर जब ईसा (अ) ने महसूस किया उन से कुफ़्र (तो) कहा कौन है अल्लाह की तरफ़ मेरी मदद करने वाला? हवारियों ने कहा हम अल्लाह की मदद करने वाले हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, और गवाह रह कि हम फ़रमांबरदार हैं, (52)

ऐ हमारे रब! हम उस पर ईमान लाए जो तू ने नाज़िल किया और हम ने रसूल की पैरवी की, सो तू हमें गवाही देने वालों के साथ लिख ले। (53)

ع ١٣ ٥ ١٣

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ

अल्लाह ने कहा	जब	54	तदबीर करने वाले	बेहतर	और अल्लाह	और अल्लाह ने ख़ुफ़िया तदबीर की	और उन्हों ने मक्र किया

يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	से	और पाक कर दूँगा तुझे	अपनी तरफ़	और उठा लूँगा तुझे	क़ब्ज़ कर लूँगा तुझे	मैं	ऐ ईसा (अ)

كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى

तक	कुफ़्र किया	जिन्हों ने	ऊपर	तेरी पैरवी की	वह जिन्हों ने	और रखूँगा	उन्हों ने कुफ़्र किया

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ

तुम थे	जिस में	तुम्हारे दरमियान	फिर मैं फ़ैसला करूँगा	तुम्हें लौट कर आना है	मेरी तरफ़	फिर	क़ियामत का दिन

فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا

अज़ाब	सो उन्हें अज़ाब दूँगा	कुफ़्र किया	जिन लोगों ने	पस	55	इख़्तिलाफ़ करते	में

شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

56	मददगार	से	उन का	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	सख़्त

وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ

उन के अजर	तो पूरा देगा	नेक	और उन्हों ने काम किए	ईमान लाए	जो लोग	और जो

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٧﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ

आयतें	से	आप (स) पर	हम पढ़ते हैं	यह	57	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	और अल्लाह

وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ

उस को पैदा किया	आदम	मिसाल जैसी	अल्लाह के नज़दीक	ईसा	मिसाल	बेशक	58	हिक्मत वाली	और नसीहत

مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا

पस न	आप का रब	से	हक़	59	सो वह हो गया	हो जा	उस को	कहा	फिर	मिट्टी	से

تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ

जब आगया	बाद	से	इस में	आप (स) से झगड़े	सो जो	60	शक करने वाले	से	हो

مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا

और अपनी औरतें	और तुम्हारे बेटे	अपने बेटे	हम बुलाएं	तुम आओ	तो कह दें	इल्म	से

وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ

अल्लाह की लानत	फिर करें (डालें)	हम इल्तिजा करें	फिर	और तुम खुद	और हम खुद	और तुम्हारी औरतें

عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا

और नहीं	सच्चा	बयान	यही	यह	बेशक	61	झूटे	पर

مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾

62	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वही	और बेशक अल्लाह	अल्लाह के सिवा	कोई माबूद

और उन्हों ने मक्र किया और अल्लाह ने ख़ुफ़िया तदबीर की, और अल्लाह (सब) तदबीर करने वालों से बेहतर है। (54)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ): मैं तुझे क़ब्ज़ कर लूँगा और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूँगा और तुझे पाक कर दूँगा उन लोगों से जिन्हों ने कुफ़्र किया, और जिन्हों ने तेरी पैरवी की उन्हें ऊपर (ग़ालिब) रखूँगा उन के जिन्हों ने कुफ़्र किया क़ियामत के दिन तक। फिर तुम्हें मेरी तरफ़ लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करूँगा जिस (बारे) में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (55)

पस जिन लोगों ने कुफ़्र किया, सो उन्हें सख़्त अज़ाब दूँगा दुनिया और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार न होगा। (56)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक काम किए तो (अल्लाह) उन के अजर उन्हें पूरे देगा, और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को। (57)

हम आप (स) पर यह आयतें और हिक्मत वाली नसीहत पढ़ते हैं। (58)

बेशक अल्लाह के नज़दीक ईसा (अ) की मिसाल आदम (अ) जैसी है, उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर कहा उस को "हो जा" तो वह हो गया। (59)

हक़ आप के रब की तरफ़ से है, पस शक करने वालों में से न होना। (60)

जो आप (स) से इस बारे में झगड़े उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आगया तो आप (स) कह दें! आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें, और हम खुद और तुम खुद (भी), फिर हम सब इल्तिजा करें, फिर झूटों पर अल्लाह की लानत भेजें। (61)

बेशक यही सच्चा बयान है, और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और बेशक अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (62)

٦ ع ٩ ١٢

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ

आप कह दें	63	फ़साद करने वालों को	जानने वाला	तो बेशक अल्लाह	वह फिर जाएं	फिर अगर

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ

कि न हम इबादत करें	और तुम्हारे दरमियान	हमारे दरमियान	बराबर	एक बात	तरफ़ (पर)	आओ	ऐ अहले किताब

اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا

रब (जमा)	किसी को	हम में से कोई	और न बनाए	कुछ	उस के साथ	और न हम शरीक करें	सिवाए अल्लाह

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾

64	मुस्लिम (फ़रमांबरदार)	कि हम	तुम गवाह रहो	तो कह दो तुम	वह फिर जाएं	फिर अगर	अल्लाह के सिवा

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمَآ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ

तौरेत	नाज़िल की गई	और नहीं	इब्राहीम (अ)	में	तुम झगड़ते हो	क्यों	ऐ अहले किताब

وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰٓاَنْتُمْ

हां तुम	65	तो क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते	उस के बाद	मगर	और इन्जील

هٰٓؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ

अब क्यों	इल्म	उस का	तुम्हें	जिस में	तुम ने झगड़ा किया	वह लोग

تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ

और तुम	जानता है	और अल्लाह	कुछ इल्म	उस का	तुम्हें	नहीं	उस में	तुम झगड़ते हो

لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا

नसरानी	और न	यहूदी	इब्राहीम (अ)	न थे	66	जानते	नहीं

وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾

67	मुश्रिक (जमा)	से	थे	और न	मुस्लिम (फ़रमांबरदार)	एक रुख़	वह थे	और लेकिन

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا

और इस	उन्हों ने पैरवी की उन की	उन लोग	इब्राहीम (अ)	लोग	सब से ज़ियादा मुनासिबत	बेशक

النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	मोमिनीन	कारसाज़	और अल्लाह	ईमान लाए	और वह लोग जो	नबी

وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ

वह गुमराह कर दें तुम्हें	काश	अहले किताब	से (की)	एक जमाअ़त	चाहती है

وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	वह समझते	और नहीं	अपने आप	मगर	और नहीं वह गुमराह करते

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	गवाह हो	हालांकि तुम	अल्लाह की आयतों का	तुम इन्कार करते हो	क्यों	ऐ अहले किताब

फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (63)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! उस एक बात पर आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर (मुशतरिक) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं और हम में से कोई किसी को न बनाए रब अल्लाह के सिवा, फिर अगर वह फिर जाएं तो तुम कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम तो मुस्लिम (फ़रमांबरदार) हैं। (64)

ऐ अहले किताब! तुम इब्राहीम (अ) के बारे में क्यों झगड़ते हो? और नहीं नाज़िल की गई तौरेत और इन्जील मगर उन के बाद, तो क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते? (65)

हां! तुम वही लोग हो कि तुम ने उस (बारे) में झगड़ा किया जिस का तुम्हें इल्म था तो अब क्यों झगड़ते हो उस (बारे) में जिस का तुम्हें कुछ इल्म नहीं, और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (66)

इब्राहीम (अ) न यहूदी थे न नसरानी, (बल्कि) वह हनीफ़ (सब से रुख़ मोड़ कर अल्लाह के हो जाने वाले) मुस्लिम (फ़रमांबरदार) थे, और वह मुश्रिकों में से न थे। (67)

बेशक सब लोगों से ज़ियादा मुनासिबत है इब्राहीम (अ) से उन लोगों को जिन्हों ने उन की पैरवी की, और इस नबी को और वह लोग जो ईमान लाए, और अल्लाह मोमिनों का कारसाज़ है। (68)

अहले किताब की एक जमाअ़त चाहती है काश! वह तुम्हें गुमराह कर दें, और वह अपने सिवा किसी को गुमराह नहीं करते, और वह समझते नहीं। (69)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों इन्कार करते हो अल्लाह की आयतों का? हालांकि तुम गवाह हो। (70)

يٰٓاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لِمَ تَلۡبِسُوۡنَ الۡحَقَّ بِالۡبَاطِلِ وَتَكۡتُمُوۡنَ الۡحَقَّ

हक़	और तुम छुपाते हो	झूट के साथ	सच	तुम उलझाते हो	क्यों	ऐ अहले किताब

وَاَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتۡ طَّآئِفَةٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اٰمِنُوۡا بِالَّذِىۡٓ ع ٨ ١٥

जो कुछ	तुम मान लो	अहले किताब	से (की)	एक जमाअ़त	और कहा	71	जानते हो	हालांकि तुम

اُنۡزِلَ عَلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَجۡهَ النَّهَارِ وَاكۡفُرُوۡٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمۡ

शायद	उस का आख़िर (शाम)	और मुन्किर हो जाओ	दिन का अव्वल हिस्सा	जो लोग ईमान लाए (मुसलमान)	पर	नाज़िल किया गया

يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤۡمِنُوۡٓا اِلَّا لِمَنۡ تَبِعَ دِيۡنَكُمۡ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡهُدٰى

हिदायत	बेशक	कह दें	तुम्हारा दीन	पैरवी करे	उस की जो	सिवाए	मानो तुम	और न	72	वह फिर जाएं

هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنۡ يُّؤۡتٰٓى اَحَدٌ مِّثۡلَ مَآ اُوۡتِيۡتُمۡ اَوۡ يُحَآجُّوۡكُمۡ

वह हुज्जत करें तुम से	या	कुछ तुम्हें दिया गया	जैसा	किसी को	दिया गया	कि	अल्लाह की हिदायत

عِنۡدَ رَبِّكُمۡ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡفَضۡلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ

वह चाहता है	जिसे	वह देता है	अल्लाह के हाथ में	फ़ज़्ल	बेशक	कह दें	तुम्हारा रब	सामने

وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ﴿٧٣﴾ ۙ يَّخۡتَصُّ بِرَحۡمَتِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ

वह चाहता है	जिसे	अपनी रहमत से	वह ख़ास कर लेता है	73	जानने वाला	वुस्अ़त वाला	और अल्लाह

وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ مَنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ

अगर अमानत रखें उस को	जो	अहले किताब	और से	74	बड़ा-बड़े	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह

بِقِنۡطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيۡكَ ۚ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ بِدِيۡنَارٍ

एक दीनार	आप अमानत रखें उस को	अगर	और उन से जो	आप को	अदा करे	ढेर माल

لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيۡكَ اِلَّا مَا دُمۡتَ عَلَيۡهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَالُوۡا

उन्हों ने कहा	इस लिए कि	यह	खड़े	उस पर	तक रहें	मगर जब	आप को	वह अदा न करे

لَيۡسَ عَلَيۡنَا فِى الۡاُمِّيّٖنَ سَبِيۡلٌ ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ

झूट	अल्लाह पर	और वह बोलते हैं	कोई राह	उम्मी (जमा)	में	हम पर	नहीं

وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧٥﴾ بَلٰى مَنۡ اَوۡفٰى بِعَهۡدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गार रहे	अपना इक़रार	पूरा करे	जो	क्यों नहीं?	75	जानते हैं	और वह

يُحِبُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَشۡتَرُوۡنَ بِعَهۡدِ اللّٰهِ وَاَيۡمَانِهِمۡ ثَمَنًا

क़ीमत	और अपनी क़समें	अल्लाह का इक़रार	ख़रीदते (हासिल करते) हैं	जो लोग	बेशक	76	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है

قَلِيۡلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا

और न	उन से कलाम करेगा अल्लाह	और न	आख़िरत में	उन के लिए	हिस्सा	नहीं	यही लोग	थोड़ी

يَنۡظُرُ اِلَيۡهِمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيۡهِمۡ ۖ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٧٧﴾

77	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए	उन्हें पाक करेगा	और न	क़ियामत के दिन	उन की तरफ़	नज़र करेगा

ऐ अहले किताब! तुम क्यों मिलाते हो सच को झूट के साथ और तुम हक़ को छुपाते हो हालांकि तुम जानते हो। (71)

और एक जमाअ़त ने कहा अहले किताब की कि जो कुछ मुसलमानों पर नाज़िल किया गया है, उसे दिन के अव्वल हिस्से में मान लो और मुन्किर हो जाओ उस के आख़िर हिस्से में (शाम को) शायद कि वह फिर जाएं। (72)

और तुम (किसी की बात) न मानो सिवाए उस के जो पैरवी करे तुम्हारे दीन की, आप (स) कह दें बेशक हिदायत अल्लाह ही की हिदायत है कि किसी को दिया गया जैसा कि तुम्हें दिया गया था, या वह तुम से तुम्हारे रब के सामने हुज्जत करें, आप (स) कह दें, बेशक फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह देता है जिस को वह चाहता है, और अल्लाह वुस्अ़त वाला, जानने वाला है। (73)

वह जिस को चाहता है अपनी रहमत से ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (74)

और अहले किताब में कोई (ऐसा है) कि अगर आप (स) उस के पास अमानत रखें ढेरों माल तो वह आप (स) को अदा करदे, और उन में से कोई (ऐसा है) अगर आप उस के पास एक दीनार अमानत रखें तो वह अदा न करे मगर जब तक आप (स) उस के सर पर खड़े रहें, यह इस लिए है कि उन्हों ने कहा हम पर उम्मियों के (बारे) में (इल्ज़ाम की) कोई राह नहीं, और वह अल्लाह पर झूट बोलते हैं, और वह जानते हैं। (75)

क्यों नहीं? जो कोई अपना इक़रार पूरा करे और परहेज़गार रहे तो बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (76)

बेशक जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों से हासिल करते हैं थोड़ी क़ीमत, यही लोग हैं जिन के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं और न अल्लाह उन से कलाम करेगा और न उन की तरफ़ नज़र करेगा क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (77)

وَاِنَّ مِنۡهُمۡ لَفَرِيۡقًا يَّلۡوٗنَ اَلۡسِنَتَهُمۡ بِالۡكِتٰبِ لِتَحۡسَبُوۡهُ

ता कि तुम समझो	किताब में	अपनी ज़बानें	मरोड़ते हैं	एक फ़रीक़	उन से (उन में)	और बेशक

مِنَ الۡكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الۡكِتٰبِ ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ هُوَ مِنۡ

से	वह	और वह कहते हैं	किताब	से	वह	और नहीं	किताब	से

عِنۡدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ

झूट	अल्लाह पर	और वह बोलते हैं	अल्लाह की तरफ़	से	वह	हालांकि नहीं	अल्लाह की तरफ़

وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنۡ يُّؤۡتِيَهُ اللّٰهُ الۡكِتٰبَ

किताब	उसे अ़ता करे अल्लाह	कि	किसी आदमी के लिए	नहीं	78	वह जानते हैं	और वह

وَالۡحُكۡمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوۡلَ لِلنَّاسِ كُوۡنُوۡا عِبَادًا لِّىۡ

मेरे	बन्दे	तुम हो जाओ	लोगों को	वह कहे	फिर	और नुबूव्वत	और हिक्मत

مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلٰكِنۡ كُوۡنُوۡا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنۡتُمۡ تُعَلِّمُوۡنَ الۡكِتٰبَ

किताब	तुम सिखाते हो	इस लिए कि	अल्लाह वाले	तुम हो जाओ	और लेकिन	अल्लाह	सिवा (बजाए)

وَبِمَا كُنۡتُمۡ تَدۡرُسُوۡنَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَاۡمُرَكُمۡ اَنۡ تَتَّخِذُوا

तुम ठहराओ	कि	हुक्म देगा तुम्हें	और न	79	तुम पढ़ते हो	और इस लिए कि

الۡمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرۡبَابًا ؕ اَيَاۡمُرُكُمۡ بِالۡكُفۡرِ بَعۡدَ

बाद	कुफ़्र का	क्या वह तुम्हें हुक्म देगा?	परवरदिगार	और नबी	फ़रिश्ते

٨ ع ٩ ١٦ اِذۡ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ﴿٨٠﴾ ع وَاِذۡ اَخَذَ اللّٰهُ مِيۡثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ

जो कुछ	नबी (जमा)	अ़हद	अल्लाह ने लिया	और जब	80	मुसलमान	तुम	जब

اٰتَيۡتُكُمۡ مِّنۡ كِتٰبٍ وَّحِكۡمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلٌ مُّصَدِّقٌ

तस्दीक़ करता हुआ	रसूल	आए तुम्हारे पास	फिर	और हिक्मत	किताब	से	मैं तुम्हें दूँ

لِّمَا مَعَكُمۡ لَتُؤۡمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنۡصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقۡرَرۡتُمۡ وَاَخَذۡتُمۡ

और तुम ने क़ुबूल किया	क्या तुम ने इक़रार किया	उस ने फ़रमाया	और तुम ज़रूर मदद करोगे उस की	उस पर	तुम ज़रूर ईमान लाओगे	तुम्हारे पास	जो

عَلٰى ذٰلِكُمۡ اِصۡرِىۡ ؕ قَالُوۡۤا اَقۡرَرۡنَا ؕ قَالَ فَاشۡهَدُوۡا وَاَنَا مَعَكُمۡ

तुम्हारे साथ	और मैं	पस तुम गवाह रहो	उस ने फ़रमाया	हम ने इक़रार किया	उन्हों ने कहा	मेरा अ़हद	इस	पर

مِّنَ الشّٰهِدِيۡنَ ﴿٨١﴾ فَمَنۡ تَوَلّٰى بَعۡدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

वह	तो वही	इस	बाद	फिर जाए	फिर जो	81	गवाह (जमा)	से

الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿٨٢﴾ اَفَغَيۡرَ دِيۡنِ اللّٰهِ يَبۡغُوۡنَ وَلَهٗۤ اَسۡلَمَ مَنۡ

जो	फ़रमांबरदार है	और उस के लिए	वह ढून्डते हैं	अल्लाह का दीन	क्या? सिवा	82	नाफ़रमान

فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّكَرۡهًا وَّاِلَيۡهِ يُرۡجَعُوۡنَ ﴿٨٣﴾

83	वह लौटाए जाएंगे	और उस की तरफ़	और नाख़ुशी से	ख़ुशी से	और ज़मीन	आस्मानों	में

और बेशक उन में एक फ़रीक़ है जो किताब (पढ़ते वक़्त) अपनी ज़बानें मरोड़ते हैं, ताकि तुम समझो कि वह किताब से है, हालांकि वह किताब से नहीं (होता), और वह कहते हैं कि वह अल्लाह की तरफ़ से है, हालांकि वह नहीं अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह पर झूट बोलते हैं और वह जानते हैं। (78)

किसी आदमी के लिए (यह शायान) नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और नुबूव्वत अ़ता करे, फिर वह लोगों को कहे कि तुम अल्लाह के बजाए मेरे बन्दे हो जाओ, लेकिन (वह यहि कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले हो जाओ, इस लिए कि तुम किताब सिखाते हो और तुम ख़ुद (भी) पढ़ते हो। (79)

और न वह तुम्हें हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को परवरदिगार ठहराओ, क्या वह तुम्हें हुक्म देगा कुफ़्र का? इस के बाद कि तुम मुसलमान (फ़रमांबरदार) हो चुके। (80)

और जब अल्लाह ने अ़हद लिया नबियों से कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और हिक्मत दूँ, फिर तुम्हारे पास रसूल आए उस की तस्दीक़ करता हुआ जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर ज़रूर ईमान लाओगे, और ज़रूर उस की मदद करोगे, उस ने फ़रमाया क्या तुम ने इक़रार किया और तुम ने इस पर मेरा अ़हद क़ुबूल क्या? उन्हों ने कहा कि हम ने इक़रार किया, उस ने फ़रमाया पस तुम गवाह रहो और मैं तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ। (81)

फिर जो इस के बाद फिर जाए तो वही नाफ़रमान हैं। (82)

क्या वह अल्लाह के दीन के सिवा (कोई और दीन) चाहते हैं? और उसी का फ़रमांबरदार है जो आस्मानों और ज़मीन में है, चार ओ नाचार, और उसी की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे। (83)

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	पर	नाज़िल किया गया	और जो	हम पर	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कह दें

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى

मूसा (अ)	दिया गया	और जो	और औलाद	और याकूब (अ)	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)

وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ

और हम	उन से	कोई एक	दरमियान	फ़र्क़ करते	नहीं	उन का रब	से	और नबी (जमा)	और ईसा (अ)

لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ

उस से	क़ुबूल किया जाएगा	तो हरगिज़ न	कोई दीन	इस्लाम	सिवा	चाहेगा	और जो	84	फ़रमांबरदार	उसी के

وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِى اللّٰهُ

हिदायत देगा अल्लाह	क्योंकर	85	नुक़्सान उठाने वाले	से	आख़िरत	में	और वह

قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ

और आएं उन के पास	सच्चे	रसूल	कि	और उन्हों ने गवाही दी	उन का (अपना) ईमान	बाद	ऐसे लोग जो काफ़िर हो गए

الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ

उन की सज़ा	ऐसे लोग	86	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत देता	नहीं	और अल्लाह	खुली निशानियां

اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾ۙ

87	तमाम	और लोग	और फ़रिश्ते	अल्लाह की लानत	उन पर	कि

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾ۙ

88	मुहलत दी जाएगी	उन्हें	और न	अज़ाब	उन से	हलका किया जाएगा	न	उस में	हमेशा रहेंगे

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۟ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और इस्लाह की	इस	बाद	तौबा की	जो लोग	मगर

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ

फिर	अपने ईमान	बाद	काफ़िर हो गए	जो लोग	बेशक	89	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿٩٠﴾

90	गुमराह	वह	और वही लोग	उन की तौबा	क़ुबूल की जाएगी	हरगिज़ न	कुफ़्र में	बढ़ते गए

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ

क़ुबूल किया जाएगा	तो हरगिज़ न	हालते कुफ़्र	और वह	और वह मर गए	कुफ़्र किया	जो लोग	बेशक

مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ

उस को	बदला दे	अगरचे	सोना	ज़मीन	भरा हुआ	उन में कोई	से

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾ ع ٩ ١١ ١٧

91	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	यही लोग

कह दें हम ईमान लाए अल्लाह पर, और जो हम पर नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इस्हाक़ (अ), याकूब (अ) और उन की औलाद पर, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) और नबियों को उन के रब की तरफ़ से, हम फ़र्क़ नहीं करते उन में से किसी एक के दरमियान, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (84)

और जो कोई चाहेगा इस्लाम के सिवा कोई और दीन तो उस से हरगिज़ क़ुबूल न किया जाएगा, और वह आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में से होगा। (85)

अल्लाह ऐसे लोगों को क्योंकर हिदायत देगा जो काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद और गवाही दे चुके कि यह रसूल सच्चे हैं, और उन के पास खुली निशानियां आ गईं, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (86)

ऐसे लोगों की सज़ा है कि उन पर लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की। (87)

वह उस में हमेशा रहेंगे। न उन से अज़ाब हलका किया जाएगा और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। (88)

मगर जिन लोगों ने इस के बाद तौबा की और इस्लाह की, तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (89)

बेशक जो लोग काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद, फिर बढ़ते गए कुफ़्र में, उन की तौबा हरगिज़ न क़ुबूल की जाएगी, और वही लोग गुमराह हैं। (90)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और वह मर गए हालते कुफ़्र में, तो हरगिज़ न क़ुबूल किया जाएगा उन में से किसी से ज़मीन भर सोना भी, अगरचे वह उस को बदले में दे, यही लोग हैं उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है और उन के लिए कोई मददगार नहीं। (91)